सारे राष्ट्रों के भाईयों,

आप को हम नमस्कार कहते हैं और आप से सुनने की चाह रखते हैं । आप में से कईयों से हम सुनते भी है, वास्तव में जवाब नदिए गये ईमेलों की हमारे पास फोल्डर भरे पड़े हैं । व्यक्तिगत रूप से जवाब नदिये जाने पर कृपया हमें क्षमा किजिये और मासिक समाचार पत्र बेहतर भेंट समझकर ग्रहण करे जो परमेश्वर के वचन के धन और उसके अनुग्रह के साक्षी से भरे पड़े हैं ।

2006 के अन्तराष्ट्रीय पाठशाला के विषय में हम सुझाव देना चाहते अन्वेशणों और आवेदन पत्रों से अत्याधिक खुश हैं और सीमित संख्या उपलब्ध होने के कारण हमें भरती बन्द करना पड़ा । हम इच्छा रखते भी हैं कि सभी लोंग आए और जो भाँड़े इत्यादी प्रबन्ध कर रखे हैं परन्तु टूउम्बाँ में छोटी झुण्ड होने के कारण हम केवल सीमित लोगों को ही केवल रहने के स्थान दे सकते हैं । नौ भिन्न-भिन्न राष्ट्रों से हमारे पास आवेदक हैं और प्रत्येक राष्ट्र से हमें संख्याएँ कम करनी पड़ी । केनयाँ में हम सब से अधिक जाने जाते हैं फिर भी हमें बहुत कम आवेदन पत्र स्वीकार करना पड़ा । हमें विश्वास हैं जितने लोगों को आने की स्वीकृति मिली है वे लोंग आवश्य राष्ट्रों में प्रेरिताई संदेश प्रभावित रीति से पहुँचाएगें । आगे को हम जैसे प्रभु अगुवाई करेगें वैसे-वैसे बहुत सारे राष्ट्रों में सम्मेलन और अल्प समय वाली प्रशिक्षण पाठशाला आयोजन करेगें ।

उसके नाम में बहुत सारी आशिषें

पावल गेलिगैन प्रभु यीशु के प्रेरित
पास्टर ज़ीन मेनिंग, पास्टर जेनैट और शिलोह के प्रेरिताई झुण्ड ।

जागृति समाचार

रिभाईवल मिनिष्ट्रिज् आष्ट्रेलिया कि ओर से
पि० ओ० बांक्स 2718 **बी० सी० टूउम्बाँ क्यु०**4350 **आष्ट्रेलिया**
दूरभाष 61-7-46130633 ; ईमेल rma@revivalministries.org.au
वेबसाईट www.revivalministries.org.au

** नवम्बर 2005 ** नवम्बर 2005 ** नवम्बर 2005 **नवम्बर 2005 **

एलिय्याह तो आएगा और सब कुछ सुधारेगा

मत्ती 17:11 **यीशु ने उन्हें उत्तर दिया** ***“एलिय्याह तो आएगा ; और सबकुछ सुधारेगा ”*** **‘एलिय्याह आया’** यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला के द्वारा, प्रभु यीशु के आने से पहले की तैयारी करेने के लिए (**पद** 12-13)। परन्तु एलिय्याह फिर आएगा और सबकुछ सुधारेगा ***“यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन आने से पहले”*** **मलाकी** 4 :5 -प्रभु यीशु का दुसरा आगमन ।

यहोवा का भयानक दिन

हम भाग्यशाली हैं कि हम दुसरे आगमन की तैयारी के समय पर हम जीवन बिता रहे हैं, जब कि यह **‘भयानक दिन’** ‘भयानक’ इसलिए हैं कि हमारे प्रभु का दण्ड पृथ्वि पर बढ़ती जा रही हैं । भूकम्प के कई दिन पहले हमारी एक दल पाकिस्तान गई थी । यह जानते हुए हमें ताज्जुब हुई कि जो थोड़े लोग जिनके पास हम गए, मैं ही पहला सच्चा प्रेरित था जिसे पाकिस्तान में ग्रहण किया; स्पष्ट हुआ कि पाकिस्तान के लिए आष्ट्रेलिया, मारुतियस, आफ्रिका, बर्मा तथा और जगह के लोगों ने प्रार्थना की थी, निर्धन के ऊपर भारी शोसन, गड़बड़ी और विरोध, संदेह और अमित्रता जिस देश के ऊपर मण्ड्राता रहा हैं, और प्रलय आँखो देखी, जिसने

70,000 लोगों से अधिक जान ली । परमेश्वर स्पष्टता से कहता हैं, दण्ड का कारण इसलिए हैं कि ***“वे जान ले कि मैं यहोवा हूँ”* यहेजकेल** 30:19 ।

न्याय आ रहा हैं

और यीशु मसीह की दूसरी आगमन का स्पष्ट अनुभव कराने के लिए बड़ी संख्या में दण्ड होगी : ***उस समय जब कि प्रभु यीशु सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उन से पलटा लेगा । वे प्रभु के साम्हने से, और उसकी शक्ति के तेज़ से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे । यह उस दिन होगा, जब वह अपने लोगों में महिमा पाने, और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा ; क्योंकि तुम ने हमारी गवाही की प्रतीति की ।***
2 **थिस्सलुनीकियों** 1:7(**ख**)- 10

लेपालकपन का आत्मा

सम्पूर्ण तौर से पुन:सुधार लाई जायेगी **‘एलिय्याह सारे बातों को सुधारेगा’** जो माता-पिता का मन को फेरेगा और पुत्रों के मन को फेरेगा (**मलाकी** 4:6)। महान अनुग्रह जो यीशु मसीह हमारे ऊपर इन दिनों उण्डेल रहा है वह हैं **पुत्रत्व का अनुग्रह**; वह **लेपालकपन का आत्मा** उण्डेल रहा हैं, जो **उसका अनुग्रह का उण्डेलना और उसका सामर्थ है जो हमें पुत्रत्व में चलने, परमेश्वर के साथ अपने पिता के समान परिपक्व रिश्ता रखते हुए चलने में अगुवाई करती है**। हम ***“परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं”*** (**रोमियों** 8:17) गए हैं जिस दिन हमारा नये सिरे से जन्म हुआ, शिशु रहते ही हमें मसीह में बढ़ना होगा, बचपन अवस्था होते हुए, अपरिपक्व अवस्था होते हुए, यौवन अवस्था के शुरुआत से लेकर परिपक्व आयु तक, जो लेपालकपन का आयु हैं, अब बढ़ा हुआ, अब परमेश्वर ने हमारे लिए जो मिरास रखी है प्राप्त करने को तैयार है ।

यह महान अनुग्रह का मिलना और योग्य-शक्ति उन के लिए उपलब्ध हैं ह्दय मसीह के अन्तिम दिनों में तैयार हैं ; जो सबकुछ त्याग दे ***“पहले तुम उसके राज्य और धार्म की खोज करो”*** **मत्ति** 6:33 ; वे लोंग जो ***“इसलिए प्रभु कहता है, कि उनके बिच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ, तो मै तुम्हें ग्रहण करूंगा । और तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियाँ होंगे; यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है।” 2*** **कुरिन्थियों** 6:17-18 ।

हमें परमेश्वर और उसके उदेश्य के खातिर अलग होना है : मिश्रीकरण नही ! असमान जुए नहीं !
ह्दय में मूरत नहीं जो हमें दूर ले जाती हैं । अपने आप में कोई ऐसा बहाना नहीं जिससे क्यों ना
मसीह के लिए और उसके उदेश्य के हम एकनिष्ठ और एक-चित्त हो जाए ।

अनुग्रह और प्रेरिताई

रोमियों 1:5 कहती हैं ***“जिस के द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली ; कि उसके नाम के कारण सब जातियों के लोंग विश्वास करके उसकी माने ।”*** यह ऐसा सामर्थशाली आयत है जो हमें अर्थ प्रकाश करती है जिससे सुसमाचार सारे जातियों में फ़तह प्राप्त कर सकता हैं । परमेश्वर ने हमें **यीशु मसीह द्वारा अनुग्रह** दी है, वह हैं **‘प्रेरिताई’**, परमेश्वर का दीया हुआ यह विशेष और असामान्य की सच्चाई, नयाँ नियम में वरदान स्वरूप यीशु मसीह को भेजने के द्वारा पूरी हुई जिसे हमने प्रेरित अंगिकार किया **इब्रानियों** 3:1 । फिर यह वरदान यीशु मसीह द्वारा विश्वास के साथ बढ़ाते हुए बारह प्रेरितों को दी :**नयाँ नियम** का सेवाकाई **नयाँ मित्रता के लिए हैं , यीशु मसीह की कलीसिया ढालने के लिए, स्थापित करने के लिए और बनाने के लिए** ; और फिर यीशु ने उसके स्वर्गरोहण के बाद पवित्र आत्मा द्वारा दिया । इसलिए प्रेरिताई की यह अनुग्रह आज भी उपलब्ध है और आज कलीसिया को वही करना आवश्यक है जो काम परमेश्वर ने करने को ठहराया ।

आज्ञा पालन = सुनकर अधीन हो जाना

दुसरा मुख्य शब्द **रोमियो** 1:5 में हैं **आज्ञा पालन** । इसका मूलार्थ होता हैं *सुनकर के अधीन हो जाना* । वही शब्द प्रयोग किया गया है 2 **कुरिन्थियों** 10 :5 में ***"हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं"*** । यह छानबीन करने लायक हैं कि ***हम कैसे सुनते है*** और ***क्या सुनते हैं*** ; यह ह्दय की तैयारी से और एक गहरी चाहत और विश्वास करने में दृढ़ता से और परमेश्वर को ढुढने से होती है (**इब्रानियों** 11:6) । **रोमियों** 1:5 कहती हैं ***"विश्वास करके उसकी माने"*** । विश्वास कहाँ से होता हैं ? **रोमियों** 10:17 कहती है ***"सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता हैं"*** ।

आप क्या सुनते हैं ?

क्या जो बात आप सुनते हो वह विश्वास करके आज्ञा पालन करने में अगुवाई करती हैं ?

जब तक आप अपने आप को प्रेरितों की शिक्षा सुनने लायक नहीं बनाते और जब तक आप उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं से प्रकाश के रहस्य ग्रहण करेने लायक नहीं बनाते (**इफिसियों** 3:4–5 **एवं** 8–10), तब तक आप प्रेरिताई की अनुग्रह जो परमेश्वर ने यीशु मसीह द्वारा दी हैं समझ नही पाएंगे । यही प्रेरिताई अनुग्रह हरेक राष्ट्रों के कलीसिया में , ***"विश्वास करके उसकी मानें"*** लाती हैं । यही विश्वास हैं जिसके लिए हमें स्पर्धा करनी चाहिए, ***"विश्वास जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था"*** **यहूदा** 3 । अब तक विश्वास का जल-शोषन होता आया हैं अथावा अधुरा सिखाता आया हैं परन्तु परमेश्वर ने प्रेरितों और भविष्द्वक्ताओं को सेवाकाई के लिए पुनःस्थापित किया हैं, पाँच प्रकार की सेवाकाई जो मसीह ने स्वर्गरोहन के समय दी । ***"जिस से पवित्र लोंग सिद्ध हो जाए,...विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र के पहिचान में एक न बन जाएं और मसीह के डील-डौल तक बढ़ जाए ।"*** **इफिसियों** 4 :12–13

नींव से लेकर सिद्धता तक

इफिसियों 2:20 सिखाती हैं **<u>कि प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताएं परमेश्वर के घर नींव हैं</u>** । यही दो सेवाकाईयाँ प्रभु यीशु मसीह जो एक ही नींव हैं जिसके ऊपर नींव डाली जाती हैं, उसके अनुग्रह और सच्चाई में कलीसिया को ठीक ढंग से स्थापित कर सकती हैं (1 **कुरिन्थियों** 3 :11) । तब सुसमाचार सुनानेवाला सुसमाचार को प्रभावीक रूप से प्रचार कर सकेगा, रखवाले (पास्टर) और शिक्षक मिलकर नये आत्माओं को उचित कलीसिया में लाकर बढ़ने और विश्वासियों को चेले बनने की सेवाकाई देते हैं । फिर भी पास्टर और शिक्षक के सेवाकाई में एक संत को अपनी परिपक्वता तक ही बढ़ा सकते हैं । **<u>उसके बाद भविष्यद्वक्ता और प्रेरित उस संत को प्रशिक्षण देने में और पूर्ण रूप से संवारने में तत्पर रहते हैं</u>**, जिससे वह परमेश्वर के गहरे ज्ञान को जो रहस्य का प्रकाश हैं जान सके और समझ सके ।

यीशु मसीह कलीसिया का नींव हैं । दूसरा नींव हैं ही नहीं जिसके ऊपर नींव डाल सके । सेवाकाई में पहले नींव प्रेरित लोंग हैं । ***"तू पतरस है"*** जो एक नींव का पत्थर हैं । ***"मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूंगा"*** **मत्ती** 16:18–19 । वह कितना शक्तिशाली हैं !

यीशु मसीह ने नयाँ नियम के भविष्यद्वक्ताओं को, **दृष्टा, पाँच प्रकार के सेवाकाई के दृष्टि दी** जो प्रेरितों के साथ-साथ काम करे, मार्ग-दशर्न करनेवाला, गिरने से पहले सावधान करनेवाला, विरोध को जाँचनेवाला, वर्तमान सच्चाई घोषित करनेवाला, लोगों और कलीसियाओं में जीवन भरनेवाला । इन दिनों प्रत्येक मण्डली में, प्रत्येक स्थानीय कलीसिया में, प्रत्येक घर कलीसिया में बाइबल अनुसार नींव डालने के लिए प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं को सेवाकाई में परमेश्वर नियुक्त कर रहा हैं । **<u>"तब कलीसिया मसीह में बनी रहेगी, जो कोने का पत्थर हैं और कलीसिया हर बातों में उस में आगे बढ़ेगी मसीह जो सिर हैं</u>** । यह होने के लिए भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को आवश्यक हैं कि संतों को संवारे (सिद्ध बनाए) ताकि सारे शरीर बढ़ने

पाँए, ***"कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में, एक न हो जांए, और एक सिद्ध मनुष्य ने बन जांए और मसीह के डील-ढौल तक न बढ़ जांए"*** **एफिसियों** 4 :12-13 । यही सेवाकाईयाँ नींव को चट्टान के साथ जो मसीह हैं, जोड़ने का काम करता हैं, अब कलीसिया बनने के विषय में प्रचार करता हैं ***"जिस का प्रचार करके हम हर मनुष्य को जता देते हैं और सारे ज्ञान से हर मनुष्य को सिखाते हैं, कि हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें"*** **कुलुस्सियों** 1: 28 ।

हाल ही के सेवाकाई विवरण

पावल और एक दल ने **लिविंग आपोस्टोलिक कान्वेंशन (जिवित प्रेरिताई सम्मेलन), डोरिगो**, एक छोटा सा शहर में, जो हमारे शहर से 500 किलो मिटर दक्षिण पड़ता हैं और दुसरा राज्य में हैं, आनन्दमयी सप्ताहान्त सेवाकाई (21-23 अक्टूबर) बितायें । डोरिगो के लोगों ने हमारे लिए झरने ने नज़दीक किराये का मकान का इन्तजाम किया, जो दिखने में अति सुन्दर था । वहाँ ताम्वोर्थ वर्ग के लोंग और याम्बा / इलुका झुण्ड (घर कलीसिया से समबन्ध रखनेवाले और दोनों ही झुण्ड सप्ताहान्त के हिस्सा बनने ढाई घण्टा यात्रा करके आए) थे । सचमुच यह सप्ताहान्त लगातार सेवाकाईयाँ, स्वादिष्ट भोजने और अच्छी संगति से भरपुर थी ।

29 अक्टूबर शनिवार, पावल और एक दल **इंगलिवूड, एक छोटा सा शहर** मे गए, (पहली बार इस शहर में आम सम्मेलन थी, शिलोह के सेवक लोंग घर कलीसिया ही कर रहे थे) और **प्रेरिताई शिक्षा** शुरू की । क्योंकि वहाँ हमने सामर्थ्यमय वचन और आत्मा का अभिषेक प्राप्त हुआ । हम सेवाकाई में एक नई अभिषेक अनुभव कर रहे हैं और आशा रखते हैं कि हमारे भाईयों के द्वारा यह अभिषेक हर जगह बहेगी । कुछ बहिनें जो ईन्गलिवूड के सभा में उपस्थित थी, **गवाही देती हैं कि उन्हें जीवन परिवर्तित अनुभव हुई** : उन्हें पुत्रत्व का प्रकाश मिली, जो यीशु मसीह हमारे प्रभु और परमेश्वर के साथ एक उन्नतमय समबन्ध हैं ।

16 अक्टूबर से 6सप्ताह के लिए **किसुमु, केनया से प्रेरित जेम्स ओकेच** हमारे साथ हैं । काफी समय पहले से वे प्रशिक्षण पाठशाला चलाते आ रहे हैं । उन्होंने प्रेरिताई संदेश सुनी और काकामेगा (दक्षिण केनयाँ) सम्मेलन में इस साल के शुरू में परिवर्तित अनुभव मिली, प्रेरिताई शिक्षा के साथ उनका यह पहला खुलासा था । इस समय उनका हमारे साथ होने से हम बहुत आशिषित हैं । वे प्रति दिन शिलोह के घर कलीसिया में वचन बाँटते हैं ; साथ ही साथ वे कर्मठ रूप से वचन-पुस्तक अध्ययन करते हैं, वी सी डी देखते है और स्ट्रांगन्स कानकोरडेन्स (*Strong's Concordance)* के गहराई अविष्कार कर रहे है । वे **नाईराँबी राज्य में देश भर प्रेरिताई संगति स्थापित करने के लिए वापस जाएगें** । हम आशिषित इसलिए भी हैं कि आफ्रिका के सारे 'बेटे' बलवन्त बनते जा रहे हैं ।

जैसे हमने गत सप्ताहान्त में दो महान दिन बिताए । शुक्रबार को 60 से अधिक लोंग शिलोह में आए । **क्रिस्टिन, इंलैण्ड से एक भविष्यवक्तिन**, सक्षिप्त रुप में बोले और फिर **जेम्स ओकेच (एक भविष्यवक्ता** केनयाँ से) **मत्ती** 7 : 24-27 से सामर्थ्यशाली वचन बाटाँ जिस में दो व्यक्तियों से, एक ने चट्टान में और दूसरे ने बालू पर घर बनाया । उन्होंने कहा जो **नींव** हम बनाते हैं, हम अपनी **रचना** को बनाते हैं और **आश्रय** से ढकते हैं । बाढ़ नींव की परिक्षा करती है, तुफान रचना की परिक्षा करती हैं और बारिश छत और आश्रय की परिक्षा करती हैं । **यीशु मसीह नींव हैं, वह कोने का पत्थर जो सारी रचना और आश्रय को सम्हालती हैं** । रेभरेन्ड जिम होसई के साथ भाई जेम्स 1100 किलो मिटर उत्तर दिशा में यात्रा करेगें । रास्तें में वे लोग प्रोसरपाइन के घर कलीसिया से मिलते हुए जायेगें ।

फिर शनिवार को लगभग 60 लोंग उपस्थित थे । क्रिस्टिन ने **तीन सभाएँ ली - भविष्यवाणी की, वचन से सिखायी और वरदान को भी प्रयोग की** । उनकी सेवाकाई कुछ अलग हैं ; वह **एक सुधार लानेवाली भविष्यवक्तिन** हैं । वे बहुत भद्र

स्वभाव की नम्र महिला हैं जिन्होंने हमें बहुत कुछ दी हैं । उनके दौरे से हमें बढ़ावा और प्रोत्साहन मिला हैं । परमेश्वर ने भविष्यवक्तिन क्रिस्टिन को हमारे सेवाकाई में **पूरे तौर से भविष्यवक्ता संबंधी नींव डालने में इस्तेमाल किया हैं** और हम परेमेश्वर के इस कार्य के लिए हम उत्तेजित भी हैं । अब पाँच प्रकार की सेवाकाई के कार्य अब खुलकर होगी । **सुसमाचार सुनानेवाले** के तौर से सुसमाचार के सेवाकाई में हम कुछ हद तक पीछे रह गए हैं । हमने 'सुसमाचार सुनानेवाले के कार्य करने के लिए' चुनौती ली हैं और शिलोह के प्रेरिताई झुण्ड़ में सुसमाचार सुनानेवाले के कार्य में अधिक सामेल होना चाहते हैं ।

टानज़ानियाँ में कांगोवाई शिविर

कुछ समय से इधर इस शिविर से दो सेवक हमारे साथ पत्र-व्यवहार कर रहे हैं । सितम्बर में दक्षिण केनया प्रेरित एकेक इस शिविर तक यात्रा करके पहुँच सके, जो अलगाया हुआ स्थान हैं, प्रवेश करने में मुश्किल होती हैं । सभी कलीसिया के 60 से अधिक सेवक लोंग प्रेरित पिटर से कलीसिया की प्रेरिताई पुन:स्थापना और पुनर्रचना के वचन सुनने के लिए इकट्ठे हुए । अनुमति के लिए मुश्किल होने के कारण, पिटर को शिविर मे रहने के लिए केवल एक ही दिन की अनुमति मिली । फिर भी भाई लोंग वचन के भुखे होने के कारण पिटर से निवेदन की और नवम्बर के अन्त में कुछ दिनों के लिए वह वहाँ लौटेगें । शिविर के भाईयों के लिए दो साईकल खरिदने के लिए हम मदद के लिए अनुरोध करते हैं । शनिवार को शिविर छोड़कर नजदीक के शहर में जा सकते हैं जहाँ एक ईमेल (Email) की दुकान हैं । हरेक बार चलने के लिए 6 घण्टे लगते हैं । साईकल में केवल दो या ढाई घण्टे लगेगें । ये भाई लोंग आशा में जि रहे हैं कि मध्य कांगो में जाकर अपने-अपने जीवन पुन:स्थापित करेगें और कलीसिया भी ।

पाकिस्तान और भारत : विपत्ति सहायता

पाकिस्तान : सेवाकाई दल जिन्होंने हमें पाकिस्तान में ग्रहण की थी भूकम्प पिडितों को सहायता पहुँचाने के लिए ढाई सप्ताह पहले कश्मिर इलाकों में गए । वे अपनी ही ओर से उन्होंने यह कदम उठाए और भली-भांति ग्रहण किया गया । वास्तव में स्थानीय टेलीवीजन स्टेशन ने उनकी साक्षात्कार (इन्टरव्यु) ली गई और मुसलिम लोगों को ताज्जुब हुई कि एक मसीही दल किस प्रकार उनको सहायता पहुँचाने के लिए 300 किलो मिटर दूर से आए ।

भारत : भारत के कुछ क्षेत्रों में भारी बाढ़ आई और आन्ध्र प्रदेश के अलग-अलग क्षेत्रों से दो मसीही अगुवों से हमें ख़बर मिली । उनके मण्डली के सदस्य लोंग दो पास्टर सहीत मारे गए । वे बहुत सतावट में हैं और दोनों पास्टरों के परिवार वाले बहुत आवश्यकता में हैं । ये दोनों हि मसीही अगुवों के साथ सितम्बर के महीने में चिन्नई में हमारी मुलाक़ात हुई थी और हम उन्हें भले व्यक्ति के नाम से सिफारिश करते हैं ।